



Bhavesh Purohit

08 Dec 1991

02:05 PM

Nathdwara

Model: Web-MyKundli

Order No: 120920201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 08/12/1991
दिन _____: रविवार
जन्म समय _____: 14:05:00 घंटे
इष्ट _____: 17:24:24 घटी
स्थान _____: Nathdwara
राज्य _____: Rajasthan
देश _____: India

अक्षांश _____: 24:56:00 उत्तर
रेखांश _____: 73:49:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:34:44 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 13:30:16 घंटे
वेलान्तर _____: 00:08:21 घंटे
साम्पातिक काल _____: 18:36:41 घंटे
सूर्योदय _____: 07:07:14 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:45:36 घंटे
दिनमान _____: 10:38:22 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 21:59:54 वृश्चिक
लग्न के अंश _____: 18:43:24 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मीन - गुरु
राशि-स्वामी _____: धनु - गुरु
नक्षत्र-चरण _____: पूर्वाषाढा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: गण्ड
करण _____: तैतिल
गण _____: मनुष्य
योनि _____: वानर
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: भू-भूपेन्द्र
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: धनु

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1913	मार्गशीर्ष	17
पंजाबी	संवत : 2048	मार्गशीर्ष	23
बंगाली	सन् : 1398	मार्गशीर्ष	22
तमिल	संवत : 2048	कार्तिकगई	22
केरल	कोल्लम : 1167	वृश्चिकम	22
नेपाली	संवत : 2048	मार्गशीर्ष	23
चैत्रादि	संवत : 2048	मार्गशीर्ष	शुक्ल 2
कार्तिकादि	संवत : 2048	मार्गशीर्ष	शुक्ल 2

पंचांग

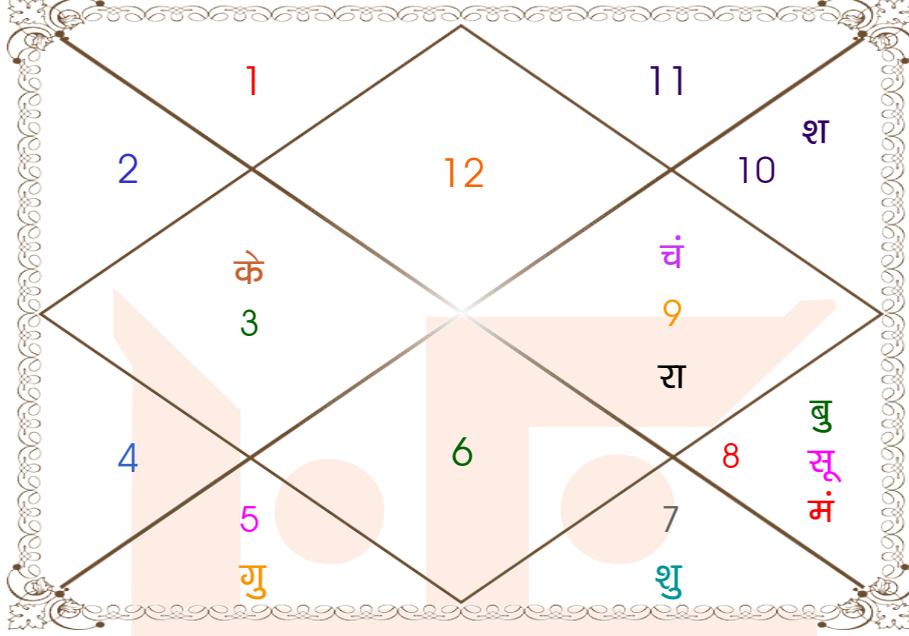
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 2
तिथि समाप्ति काल _____ : 13:46:10
जन्म तिथि _____ : 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : मूल
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 08:25:04 घंटे
जन्म योग _____ : पूर्वाषाढा
सूर्योदय कालीन योग _____ : गण्ड
योग समाप्ति काल _____ : 23:46:04 घंटे
जन्म योग _____ : गण्ड
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 13:46:10 घंटे
जन्म करण _____ : तैतिल
भयात _____ : 14:09:51
भभोग _____ : 67:31:04
भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 15 वर्ष 9 मा 14 दि

घात चक्र

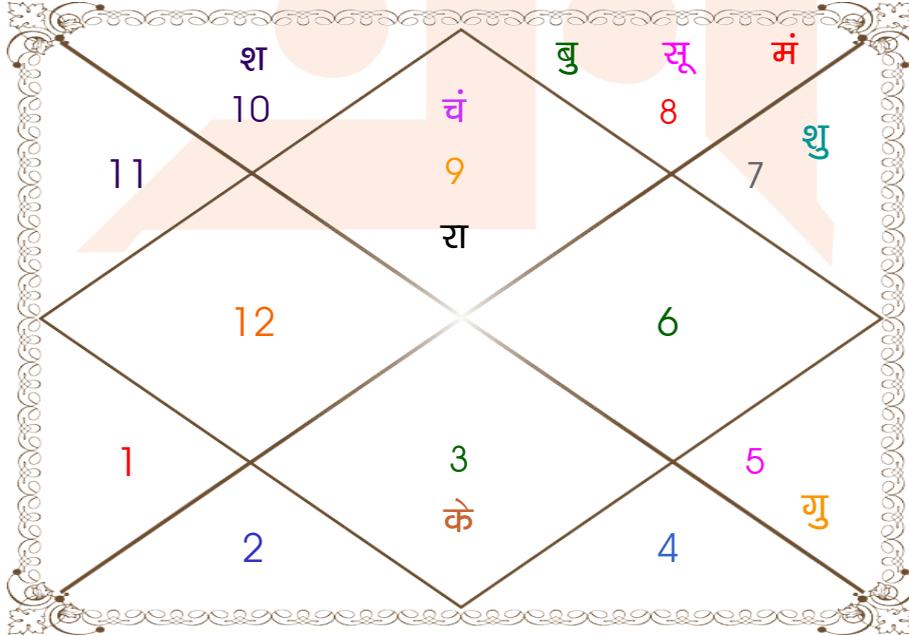
मास _____ : श्रावण
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शुक्रवार
नक्षत्र _____ : भरणी
योग _____ : वज्र
करण _____ : तैतिल
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मार्जार
लग्न _____ : धनु
सूर्य _____ : तुला
चन्द्र _____ : मीन
मंगल _____ : वृश्चिक
बुध _____ : सिंह
गुरु _____ : धनु
शुक्र _____ : कुम्भ
शनि _____ : कन्या
राहु _____ : कुम्भ

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली



चन्द्र कुंडली



Astro House
Astrologer Dr Mahesh
एस्ट्रोलॉजर डॉ. महेश

05 - रामाश्रय, उदयपुर (राजस्थान) 313001, भारत
Other Services - Vastu | Numerology | Prashna Jyotish
For Whatsapp Counsultation - 9145853726
Web - www.astrohouse.org , Email - connectastromahesh@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

ल			के
श			गु
रा चं	बु सू मं	शु	

लग्न कुंडली

		ल
के		
		श
गु	शु	चं रा सू मं बु

विंशोत्तरी
शुक्र 15वर्ष 9मा 14दि

शुक्र

08/12/1991

23/09/2107

शुक्र	22/09/2007
सूर्य	22/09/2013
चन्द्र	22/09/2023
मंगल	22/09/2030
राहु	22/09/2048
गुरु	22/09/2064
शनि	22/09/2083
बुध	23/09/2100
केतु	23/09/2107

योगिनी

सिद्धा 5वर्ष 6मा 9दि

उल्का

17/06/2020

18/06/2026

उल्का	18/06/2021
सिद्धा	18/08/2022
संकटा	18/12/2023
मंगला	17/02/2024
पिंगला	17/06/2024
धान्या	17/12/2024
भ्रामरी	17/08/2025
भद्रिका	18/06/2026

Astro House
Astrologer Dr Mahesh
एस्ट्रोलॉजर डॉ. महेश

05 - रामाश्रय, उदयपुर (राजस्थान) 313001, भारत
Other Services - Vastu | Numerology | Prashna Jyotish
For Whatsapp Counsitation - 9145853726
Web - www.astrohouse.org , Email - connectastromahesh@gmail.com

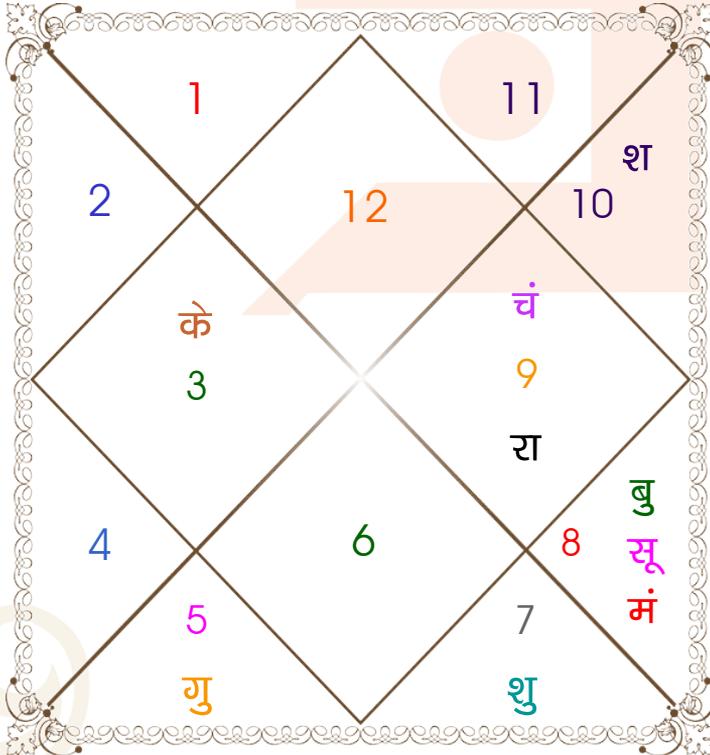
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व अ राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद नं.	रा न	न अं.	स्थिति
लग्न	मीन	18:43:24	486:33:30	रेवती	1	27	गुरु बुध	केतु ---
सूर्य	वृश्चि	21:59:54	01:00:57	ज्येष्ठा	2	18	मंगल बुध	सूर्य मित्र राशि
चंद्र	धनु	16:08:25	11:52:40	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु शुक्र	सूर्य सम राशि
मंगल	अ वृश्चि	12:51:47	00:43:03	अनुराधा	3	17	मंगल शनि	मंगल स्वराशि
बुध	व अ वृश्चि	22:38:09	01:23:02	ज्येष्ठा	2	18	मंगल बुध	चंद्र सम राशि
गुरु	सिंह	20:04:40	00:04:11	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य शुक्र	राहु मित्र राशि
शुक्र	तुला	08:37:56	01:09:48	स्वाति	1	15	शुक्र राहु	राहु मूलत्रिकोण
शनि	मक	09:40:10	00:05:35	उत्तराषाढा	4	21	शनि सूर्य	शुक्र स्वराशि
राहु	धनु	16:06:55	00:00:00	पूर्वाषाढा	1	20	गुरु शुक्र	सूर्य नीच राशि
केतु	मिथु	16:06:55	00:00:00	आर्द्रा	3	6	बुध राहु	शुक्र नीच राशि
हर्ष	धनु	18:33:50	00:03:18	पूर्वाषाढा	2	20	गुरु शुक्र	राहु ---
नेप	धनु	21:36:41	00:02:02	पूर्वाषाढा	3	20	गुरु शुक्र	गुरु ---
प्लूटो	तुला	27:32:10	00:02:15	विशाखा	3	16	शुक्र गुरु	शुक्र ---
दशम भाव	धनु	14:40:44	--	पूर्वाषाढा	--	20	गुरु शुक्र	शुक्र --

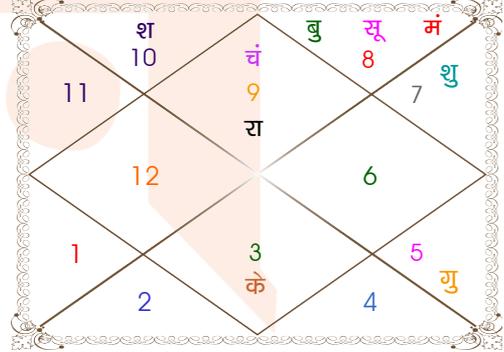
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:44:56

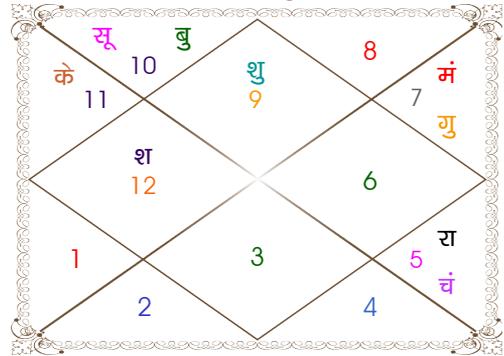
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



Astro House
Astrologer Dr Mahesh
एस्ट्रोलाजर डॉ. महेश

05 - रामाश्रय, उदयपुर (राजस्थान) 313001, भारत
Other Services - Vastu | Numerology | Prashna Jyotish
For Whatsapp Counsitation - 9145853726
Web - www.astrohouse.org , Email - connectastroamahesh@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 03:02:58	मीन 18:43:24
2	मेष 03:02:58	मेष 17:22:31
3	वृष 01:42:04	वृष 16:01:37
4	मिथुन 00:21:11	मिथुन 14:40:44
5	कर्क 00:21:11	कर्क 16:01:37
6	सिंह 01:42:04	सिंह 17:22:31
7	कन्या 03:02:58	कन्या 18:43:24
8	तुला 03:02:58	तुला 17:22:31
9	वृश्चिक 01:42:04	वृश्चिक 16:01:37
10	धनु 00:21:11	धनु 14:40:44
11	मकर 00:21:11	मकर 16:01:37
12	कुम्भ 01:42:04	कुम्भ 17:22:31

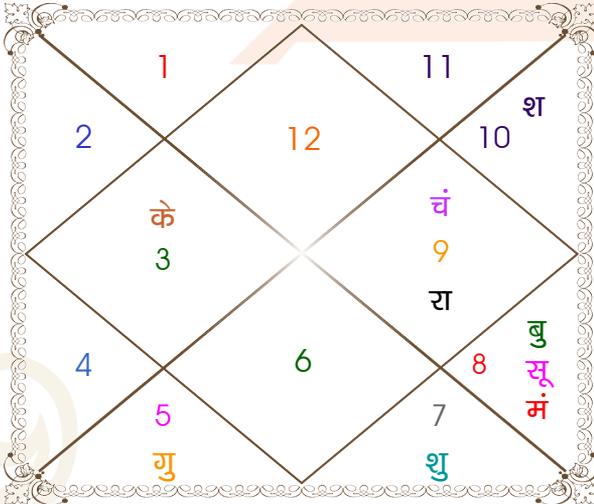
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	18:43:24
2	मेष	23:18:58
3	वृष	20:28:00
4	मिथुन	14:40:44
5	कर्क	09:58:55
6	सिंह	10:24:37
7	कन्या	18:43:24
8	तुला	23:18:58
9	वृश्चिक	20:28:00
10	धनु	14:40:44
11	मकर	09:58:55
12	कुम्भ	10:24:37

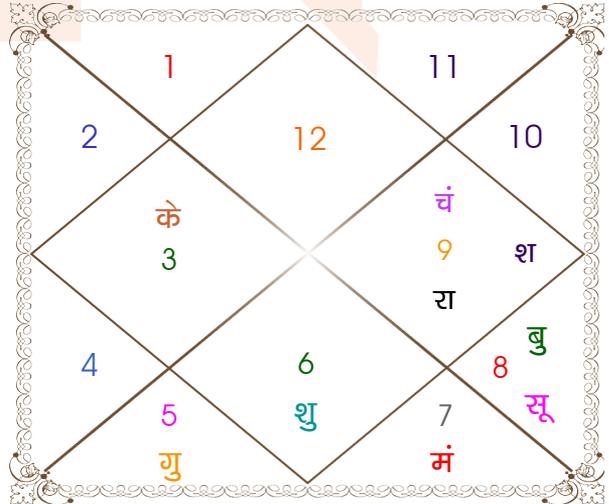
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल

चलित कुंडली



भाव कुंडली



Astro House
Astrologer Dr Mahesh
एस्ट्रोलॉजर डॉ. महेश

05 - रामाश्रय, उदयपुर (राजस्थान) 313001, भारत
Other Services - Vastu | Numerology | Prashna Jyotish
For Whatsapp Counsitation - 9145853726
Web - www.astrohouse.org, Email - connectastromahesh@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 15 वर्ष 9 मास 14 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
08/12/1991	22/09/2007	22/09/2013	22/09/2023	22/09/2030
22/09/2007	22/09/2013	22/09/2023	22/09/2030	22/09/2048
08/12/1991	सूर्य 10/01/2008	चंद्र 23/07/2014	मंगल 18/02/2024	राहु 04/06/2033
सूर्य 22/01/1992	चंद्र 10/07/2008	मंगल 21/02/2015	राहु 08/03/2025	गुरु 29/10/2035
चंद्र 22/09/1993	मंगल 15/11/2008	राहु 22/08/2016	गुरु 12/02/2026	शनि 04/09/2038
मंगल 22/11/1994	राहु 10/10/2009	गुरु 22/12/2017	शनि 24/03/2027	बुध 23/03/2041
राहु 22/11/1997	गुरु 29/07/2010	शनि 23/07/2019	बुध 20/03/2028	केतु 11/04/2042
गुरु 23/07/2000	शनि 11/07/2011	बुध 22/12/2020	केतु 16/08/2028	शुक्र 10/04/2045
शनि 22/09/2003	बुध 17/05/2012	केतु 23/07/2021	शुक्र 16/10/2029	सूर्य 05/03/2046
बुध 23/07/2006	केतु 22/09/2012	शुक्र 24/03/2023	सूर्य 21/02/2030	चंद्र 04/09/2047
केतु 22/09/2007	शुक्र 22/09/2013	सूर्य 22/09/2023	चंद्र 22/09/2030	मंगल 22/09/2048

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
22/09/2048	22/09/2064	22/09/2083	23/09/2100	23/09/2107
22/09/2064	22/09/2083	23/09/2100	23/09/2107	00/00/0000
गुरु 10/11/2050	शनि 25/09/2067	बुध 18/02/2086	केतु 19/02/2101	शुक्र 23/01/2111
शनि 23/05/2053	बुध 04/06/2070	केतु 15/02/2087	शुक्र 21/04/2102	सूर्य 09/12/2111
बुध 29/08/2055	केतु 14/07/2071	शुक्र 16/12/2089	सूर्य 27/08/2102	00/00/0000
केतु 04/08/2056	शुक्र 13/09/2074	सूर्य 22/10/2090	चंद्र 28/03/2103	00/00/0000
शुक्र 05/04/2059	सूर्य 26/08/2075	चंद्र 23/03/2092	मंगल 24/08/2103	00/00/0000
सूर्य 22/01/2060	चंद्र 26/03/2077	मंगल 20/03/2093	राहु 10/09/2104	00/00/0000
चंद्र 23/05/2061	मंगल 05/05/2078	राहु 08/10/2095	गुरु 17/08/2105	00/00/0000
मंगल 29/04/2062	राहु 11/03/2081	गुरु 12/01/2098	शनि 26/09/2106	00/00/0000
राहु 22/09/2064	गुरु 22/09/2083	शनि 23/09/2100	बुध 23/09/2107	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 15 वर्ष 9 मा 20 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

Astro House
Astrologer Dr Mahesh
एस्ट्रोलॉजर डॉ. महेश

05 - रामाश्रय, उदयपुर (राजस्थान) 313001, भारत
Other Services - Vastu | Numerology | Prashna Jyotish
For Whatsapp Counsitation - 9145853726
Web - www.astrohouse.org , Email - connectastroamahesh@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु 08/03/2025 12/02/2026	मंगल - शनि 12/02/2026 24/03/2027	मंगल - बुध 24/03/2027 20/03/2028	मंगल - केतु 20/03/2028 16/08/2028	मंगल - शुक्र 16/08/2028 16/10/2029
गुरु 22/04/2025 शनि 15/06/2025 बुध 03/08/2025 केतु 23/08/2025 शुक्र 18/10/2025 सूर्य 04/11/2025 चंद्र 03/12/2025 मंगल 23/12/2025 राहु 12/02/2026	शनि 17/04/2026 बुध 13/06/2026 केतु 07/07/2026 शुक्र 12/09/2026 सूर्य 03/10/2026 चंद्र 05/11/2026 मंगल 29/11/2026 राहु 29/01/2027 गुरु 24/03/2027	बुध 14/05/2027 केतु 04/06/2027 शुक्र 03/08/2027 सूर्य 22/08/2027 चंद्र 21/09/2027 मंगल 12/10/2027 राहु 05/12/2027 गुरु 23/01/2028 शनि 20/03/2028	केतु 29/03/2028 शुक्र 22/04/2028 सूर्य 30/04/2028 चंद्र 12/05/2028 मंगल 21/05/2028 राहु 12/06/2028 गुरु 02/07/2028 शनि 26/07/2028 बुध 16/08/2028	शुक्र 26/10/2028 सूर्य 16/11/2028 चंद्र 22/12/2028 मंगल 16/01/2029 राहु 21/03/2029 गुरु 16/05/2029 शनि 23/07/2029 बुध 21/09/2029 केतु 16/10/2029
मंगल - सूर्य 16/10/2029 21/02/2030	मंगल - चंद्र 21/02/2030 22/09/2030	राहु - राहु 22/09/2030 04/06/2033	राहु - गुरु 04/06/2033 29/10/2035	राहु - शनि 29/10/2035 04/09/2038
सूर्य 23/10/2029 चंद्र 02/11/2029 मंगल 10/11/2029 राहु 29/11/2029 गुरु 16/12/2029 शनि 05/01/2030 बुध 23/01/2030 केतु 31/01/2030 शुक्र 21/02/2030	चंद्र 11/03/2030 मंगल 23/03/2030 राहु 24/04/2030 गुरु 23/05/2030 शनि 25/06/2030 बुध 25/07/2030 केतु 07/08/2030 शुक्र 11/09/2030 सूर्य 22/09/2030	राहु 17/02/2031 गुरु 28/06/2031 शनि 02/12/2031 बुध 19/04/2032 केतु 16/06/2032 शुक्र 27/11/2032 सूर्य 15/01/2033 चंद्र 08/04/2033 मंगल 04/06/2033	गुरु 29/09/2033 शनि 15/02/2034 बुध 19/06/2034 केतु 09/08/2034 शुक्र 02/01/2035 सूर्य 15/02/2035 चंद्र 29/04/2035 मंगल 19/06/2035 राहु 29/10/2035	शनि 11/04/2036 बुध 05/09/2036 केतु 05/11/2036 शुक्र 27/04/2037 सूर्य 18/06/2037 चंद्र 13/09/2037 मंगल 13/11/2037 राहु 18/04/2038 गुरु 04/09/2038
राहु - बुध 04/09/2038 23/03/2041	राहु - केतु 23/03/2041 11/04/2042	राहु - शुक्र 11/04/2042 10/04/2045	राहु - सूर्य 10/04/2045 05/03/2046	राहु - चंद्र 05/03/2046 04/09/2047
बुध 14/01/2039 केतु 09/03/2039 शुक्र 11/08/2039 सूर्य 27/09/2039 चंद्र 13/12/2039 मंगल 06/02/2040 राहु 25/06/2040 गुरु 27/10/2040 शनि 23/03/2041	केतु 15/04/2041 शुक्र 17/06/2041 सूर्य 07/07/2041 चंद्र 08/08/2041 मंगल 30/08/2041 राहु 26/10/2041 गुरु 17/12/2041 शनि 15/02/2042 बुध 11/04/2042	शुक्र 10/10/2042 सूर्य 04/12/2042 चंद्र 05/03/2043 मंगल 08/05/2043 राहु 20/10/2043 गुरु 14/03/2044 शनि 03/09/2044 बुध 06/02/2045 केतु 10/04/2045	सूर्य 27/04/2045 चंद्र 24/05/2045 मंगल 12/06/2045 राहु 01/08/2045 गुरु 14/09/2045 शनि 05/11/2045 बुध 21/12/2045 केतु 09/01/2046 शुक्र 05/03/2046	चंद्र 20/04/2046 मंगल 22/05/2046 राहु 12/08/2046 गुरु 24/10/2046 शनि 19/01/2047 बुध 06/04/2047 केतु 08/05/2047 शुक्र 08/08/2047 सूर्य 04/09/2047

Astro House
Astrologer Dr Mahesh
एस्ट्रोलाजर डॉ. महेश

05 - रामाश्रय, उदयपुर (राजस्थान) 313001, भारत
Other Services - Vastu | Numerology | Prashna Jyotish
For Whatsapp Counsitation - 9145853726
Web - www.astrohouse.org , Email - connectastromahesh@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

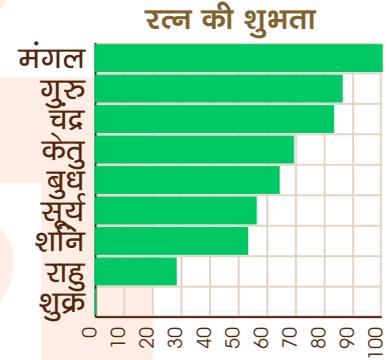
मूलांक	8
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 2, 8, 4
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	मीन, सिंह
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	100%	भाग्योदय, धन
पुखराज	गुरु	86%	शत्रु व रोग मुक्ति, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
मोती	चंद्र	83%	व्यावसायिक उन्नति, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	69%	सुख, भाग्योदय
पन्ना	बुध	64%	भाग्योदय, सुख, दम्पति
माणिक्य	सूर्य	56%	भाग्योदय, शत्रु व रोग मुक्ति
नीलम	शनि	53%	धनार्जन, कम खर्च
गोमेद	राहु	28%	व्यावसायिक हानि, शत्रु व रोग
हीरा	शुक्र	0%	दुर्घटना, पराक्रम हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	22/09/2007	38%	70%	100%	70%	86%	0%	59%	41%	75%
सूर्य	22/09/2013	69%	89%	100%	64%	92%	0%	31%	3%	56%
चंद्र	22/09/2023	62%	95%	100%	70%	86%	0%	53%	3%	56%
मंगल	22/09/2030	62%	89%	100%	52%	92%	0%	53%	3%	75%
राहु	22/09/2048	38%	70%	92%	64%	86%	0%	59%	52%	56%
गुरु	22/09/2064	62%	89%	100%	52%	98%	0%	53%	28%	69%
शनि	22/09/2083	38%	70%	92%	70%	86%	0%	65%	41%	56%
बुध	23/09/2100	62%	70%	100%	77%	86%	0%	53%	28%	69%
केतु	23/09/2107	38%	70%	100%	64%	86%	0%	31%	3%	81%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/1991-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995 16/02/1996-17/04/1998	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	शुभ	धनार्जन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	स्वास्थ्य
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	सन्तति कष्ट
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	सम	बदनामी
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	शुभ	व्यावसाय

Astro House
Astrologer Dr Mahesh
एस्ट्रोलॉजर डॉ. महेश

05 - रामाश्रय, उदयपुर (राजस्थान) 313001, भारत
Other Services - Vastu | Numerology | Prashna Jyotish
For Whatsapp Counsultation - 9145853726
Web - www.astrohouse.org, Email - connectastromahesh@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्मकाल में मंगल की स्थिति चन्द्रकुंडली में द्वादश भाव में है अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। चूंकि चन्द्र से मांगलिक होने का दोष अधिक प्रबल नहीं होता। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति किंचित व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आप समय समय पर व्यय करते रहेंगे। जिससे आपको अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन इसका प्रभाव अल्प रहेगा। तथा सामान्य रूप से धनार्जन होता रहेगा। शारीरिक स्वास्थ्य आपका मध्यम रहेगा। मानसिक परेशानी की अनुभूति आपको समय समय पर होती रहेगी। साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी उत्पन्न होंगे लेकिन उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में किंचित उग्रता का भाव हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में किंचित विलम्ब हो सकता है परन्तु इस कार्य में सफलता आपको अवश्य प्राप्त होगा। साथ ही विवाह पूर्व किसी वार्ता में गतिरोध भी उत्पन्न हो सकता है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। विवाह के पश्चात आपका दाम्पत्य जीवन परस्पर सामंजस्य के कारण अनुकूल रहेगा तथा इसका उचित उपभोग करने में आप समर्थ रहेंगे।

चन्द्रकुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील होगी परन्तु प्रचुर मात्रा में धनार्जन होने के कारण इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों तथा समस्याओं का सामना तथा समाधान करने में भी आप सफल होंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि से भाई बहनों का सुख मध्यम रहेगा। पराक्रम तथा आत्मबल में वृद्धि होगी जिससे आपके लाभ एवं उन्नति के मार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। षष्ठ

Astro House
Astrologer Dr Mahesh
एस्ट्रोलॉजर डॉ. महेश

05 - रामाश्रय, उदयपुर (राजस्थान) 313001, भारत
Other Services - Vastu | Numerology | Prashna Jyotish
For Whatsapp Counsultation - 9145853726
Web - www.astrohouse.org , Email - connectastroamahesh@gmail.com

भावस्थ मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने में आपको सफलता मिलेगी। यदा कदा पित या गर्मी द्वारा उत्पन्न रोगों से आपको परेशानी का सामना करना पड़ेगा। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन परस्पर सामंजस्य के कारण आप सुखी दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे परस्पर मांगलिक दोष का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु सदृश पाप ग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख एवं सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आनन्द पूर्वक आप अपने दाम्पत्य जीवन का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग भी प्रदान करेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में घातक नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक जन्म से ही परिवार से पृथक रहता है। नाना-नानी, दादा-दादी का स्नेह आंशिक रूप में मिलता है। जातक को माता-पिता का विरह सहना पड़ता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय हो जाता है। जातक की सन्तान कभी-कभी अस्वस्थ हो जाती है और जातक को थोड़ा बहुत चिन्ता परेशानी घेर लेती है। घर में सुख शान्ति का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। नौकरी-व्यवसाय में व्यवधान उपस्थित होता है पर कालान्तर में वह स्वतः समाप्त हो जाता है। कभी जातक को पदच्युत होने का भय भी होता है और व्यापार व्यवसाय में परिश्रम करने के बाद भी विशेष रूप से जमता नहीं या आंशिक नुकसान उठाना पड़ता है। भागीदारी में मनमुटाव की स्थिति पैदा हो जाती है एवं जातक को आंशिक रूप में क्लेश भोगना पड़ता है।

इस योग के कारण जातक के अनेक शत्रु होते हैं। वे सब षड्यन्त्र रचते रहते हैं पर वे लोग अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं हो पाते। मित्रगण समय-समय पर धोखा दे जाते हैं। जिससे जातक को थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है और सरकारी पदाधिकारी से अनबन रहती है तथा राज्यपक्ष से भी क्षति प्राप्त होती है। जातक की स्थिति कभी राजा तो कभी रंक जैसा जीवन व्यतीत होता है।

इस योग के प्रभाव से जातक के शरीर में रोग व्याधि समय-समय पर घेर लेती है। कभी चोट लगने का भय भी होता है। जातक को सुख शान्ति के लिए संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक अच्छा समय आता है एवं उसमें प्रसिद्धि भी मिलती है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।

9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।
11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- लग्नेश षष्ठ भाव में स्थित है और उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें । विद्यालय में पुस्तकों का दान करें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त

वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

नवमभाव में सूर्य होतो जातक साहसी, ज्योतिषी, नेता सदाचारी, तपस्वीयोगी, वाहनसुख, भृत्यसुख एवं पिता के लिए अशुभ होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्योगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आप पिता के स्नेह पात्र होंगे। उनका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर शारीरिक रूप से वे व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। जीवन में धन सम्पत्ति से सर्वदा युक्त रहेंगे एवं समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही आपके भाग्योदय संबंधी कार्यों में भी उनकी आपके लिए पूर्ण प्रेरणा तथा सहयोग का भाव रहेगा।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगे एवं उनकी आज्ञा पालन तथा सेवा करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर मधुर संबंध रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद उत्पन्न होने के कारण इनमें अल्प मात्रा में तनाव या कटुता का समावेश का आभास होगा जो कुछ समयोपरान्त स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी हार्दिक सहायता करेंगे एवं सुख दुःख में उनको पूर्ण वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगे।

चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

धनु राशि में चन्द्रमा हो तो जातक वक्त, सुन्दर, शिल्पज्ञ, शत्रुविनाशक उच्च बौद्धिक स्तर वाला, सुखी विवाहित जीवन, विरासत में धन सम्पत्ति पाने वाला, साहित्य के प्रति रुचि का दिखावा करने वाला एवं लेखक होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी

अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

मंगल

नौवें भाव में मंगल हो तो जातक अभिमानी, क्रोधी, नेता, द्वेषी, अल्पलाभ करने वाला, यशस्वी, असन्तुष्ट, भातृविरोधी, अधिकारी एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल नवम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। आपके प्रति उनका अपनत्व रहेगा एवं जीवन के सुख दुःख में आपका नित्य सहयोग करते रहेंगे। इसके साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी वे वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता अवश्य प्रदान करेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा तथा इससे वे युक्त रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से स्नेह एवं सम्मान प्रदान करेंगे एवं सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। आपके आपसी संबंधों में मधुरता रहेगी परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण उनमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी रहेगी। इसके साथ ही उनकी भाग्योन्नति में भी आप समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार से अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगे।

बुध

नवमभाव में बुध हो तो जातक विद्वान् लेखक, ज्योतिषी, धर्मभीरु, व्यवसाय प्रिय, भाग्यवान्, सम्पादक, गवैया, कवि एवं सदाचारी होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुखर्ष, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

षष्ठभाव में गुरु हो तो जातक विवेकी, प्रसिद्ध, ज्योतिषी, विद्वान् सुकर्मरत, दुर्बल, उदार, प्रतापी, नीरोगी, लोकमान्य, बहुत कमशत्रु एवं मधुरभाषी होता है।

सिंह राशि में गुरु हो तो जातक धार्मिक, प्रेमी, कार्यकुशल, सभाचतुर शत्रुजित्, आकर्षकव्यक्तित्व, उच्चाकांक्षी, सक्रिय, सुखी, कुशाबुद्धि साहित्य की ओर झुकाव, लेखक एवं उच्च सरकारी पद पर आसीन होता है।

शुक्र

अष्टम भाव में शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, क्रोधी, मनस्वी, दुखी, गुप्तरोगी, पर्यटनशील, परस्त्रीरत, विदेशवासी, निर्दयी, गुप्तविद्याओं के प्रतिरुचि एवं रोगी होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मकर राशि में शनि हो तो जातक कुशा बुद्धि, परिश्रमी, आस्तिक भोगी, मिथ्याभाषी, शिल्पकार, प्रवासी, अच्छा घरेलू जीवन, विद्वान्, सन्देह करनेवाला, बदला लेने वाला एवं दार्शनिक होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

धनु राशि में राहु हो तो जातक प्रारम्भिक जीवन में सुखी, दत्तक जाने वाल एवं मित्र द्रोही होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

मिथुन राशि में केतु हो तो जातक वायुरोग से पीड़ित, अभिमानी सरलता से सन्तुष्ट होने वाला, अल्पायु एवं छोटी सी बात पर क्रोधित हो जाने वाला होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(22/09/2023 - 22/09/2030)

मंगल की महादशा 22/09/2023 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 22/09/2030 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल नवम भाव में स्थित है। मंगल की तृतीय, चतुर्थ और वारहवें भाव पर दृष्टि है। मंगल इस दशा के दौरान अच्छा फल देगा। इसके पूर्व आपकी दस वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपकी यात्रा, कुछ व्यय, आध्यत्मिक उन्नति और सम्भवतः सफलता में कुछ बाधा हुई होगी। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति, समृद्धि और परिवार से सुख की प्राप्ति तथा यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपमें रोगों और कष्टों से लड़ने की शक्ति होगी। आपमें भरपूर-आत्मविश्वास तथा जीवनी-शक्ति होगी। मौसम में परिवर्तन के कारण आप सरदर्द, संक्रामक बीमारी तथा ज्वर से पीड़ित हो सकते हैं। इन मामूली बीमारियों को छोड़ इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति सृष्ट होगी। नवम भाव में स्थित होने के कारण मंगल आपको सम्पत्ति, समृद्धि, और सौभाग्य देगा तथा आपको पिता से लाभ मिलेगा। आपको सम्पत्ति, माता से लाभ मिल सकते हैं। किसी शुभ उद्देश्य के लिए व्यय भी हो सकता है। आपको सट्टे तथा निवेश से लाभ हो सकता है। जीविका के लिए सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी, दवा के क्षेत्र लोहा-इस्पात से सम्बद्ध व्यवसाय या पुलिस के कार्य का चयन कर सकते हैं। आपके लिए योजना तथा प्रशासन से सम्बद्ध व्यवसाय लाभदायक हो सकते हैं। तकनीकी कार्य आपके लिये उपयुक्त होगा। आप एक सफल सर्जन हो सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों को यश, ख्याति, शक्ति और अधिकार की प्राप्ति होगी और आपकी आय में वृद्धि तथा उच्चाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का व्यय हो सकता है। आपको साझेदारी में सावधानी बरतनी चाहिए। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों का विदेश से व्यापार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

मंगल की महादशा के दौरान आपको वाहन-सुख मिलेगा। शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्राएं होंगी। इस दशा के दौरान आपको जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। मंगल की अन्तर्दशा में खास तौर से सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा में आप सफल होंगे और इस दशा में बहुत अच्छा करेंगे। गणित, विधि, इन्जीनियरिंग, विज्ञान तथा तकनीकी के विषय आपके लिए बहुत उपयुक्त होंगे। आपमें आत्मविश्वास होगा और आप कार्य कुशलता

Astro House
Astrologer Dr Mahesh
एस्ट्रोलॉजर डॉ. महेश

05 - रामाश्रय, उदयपुर (राजस्थान) 313001, भारत
Other Services - Vastu | Numerology | Prashna Jyotish
For Whatsapp Counsultation - 9145853726
Web - www.astrohouse.org , Email - connectastromahesh@gmail.com

से अपना लक्ष्य प्राप्त करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर होगा। आपको आपके बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके जीवनसाथी को सम्बन्धियों से लाभ मिलेगा और अपने ही प्रयासों से धनोपार्जन करेंगे। आपकी माता का आप पर बहुत प्रभाव होगा। आपको उनसे लाभ मिलेगा। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम होगा और सम्पत्ति, सफलता, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को साझेदारी के व्यवसाय में धन की प्राप्ति होगी। आपके बड़े भाई-बहनों को लाभ का अवसर मिलेगा, उनके प्रभावशाली मित्र होंगे और उनकी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा और आपको सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आगे राहु की अन्तर्दशा में कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं होगी। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको सफल निवेश तथा सट्टे और कुछ परिवर्तन से लाभ होगा। शनि की अन्तर्दशा के कारण आपको कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं हो सकती हैं। बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ होगा। आगे केतु की अन्तर्दशा में कुछ मानसिक तथा शारीरिक समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और जीवन वृत्ति में उन्नति हो सकती है। सूर्य की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति, शक्ति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सुख की प्राप्ति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्रा, व्यय तथा आध्यात्मिक उन्नति होगी।

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु
(08/03/2025 - 12/02/2026)**

आपकी मंगल की महादशा 22/09/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 08/03/2025 को प्रारंभ होकर 12/02/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं से मुक्ति मिलेगी। कर्ज खत्म होगा। रोजगार के मौके मिलेंगे। कार्यालय उत्तम होगा। चुनाव में सफल हो सकते हैं। मुकदमे में जीत होगी। ज्ञानार्जन में रुचि होगी, अध्यात्म में समय बिताएंगे। जनता से सम्मान मिलेगा। प्रोन्नति हो सकती है। वेतन बढ़ सकता है।

आपके जीवन साथी को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आपके पिता कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। माता की यात्राएं होंगी, जीवनस्तर ऊंचा होगा, मित्र और धन नसीब होंगे। आपके भाई-बहन अचल संपत्ति क्रय करेंगे, घरेलू सुख रहेगा, मित्र मदद करेंगे।

आपकी संतान शिक्षा में प्रगति करेगी; वे घर में सुखी रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चपद प्राप्त करेंगे, कार्यों में सफलता मिलेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों के खर्चे बढ़ सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली व्याधि हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शनि
(12/02/2026 - 24/03/2027)**

आपके लिए मंगल की महादशा 22/09/2023 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 12/02/2026 को प्रारंभ होकर 24/03/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आपको हर प्रकार से लाभ होगा। आय में वृद्धि होगी। धन, ज्ञान और सम्मान का संकेत है। साख उत्तम रहेगी। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। संतान से सुख मिलेगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। कार्यों में सफलता मिलेगी। कर्मठता, धैर्य और कार्यक्षमता में वृद्धि होगी। कुछ धन आसानी से मिल जाएगा।

आपके जीवनसाथी को पहले किये निवेश से आय होगी। आपके पिता की लघु यात्राएं होंगी; उत्साह उच्चस्तर का रहेगा। माता के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकते हैं; आय अच्छी होगी। आपके भाई-बहनों की यात्रा हो सकती है; उच्च शिक्षा, भौतिक सुख, आत्मविश्वास में वृद्धि और कार्यों में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान सामूहिक गतिविधियों में भाग लेगी, उन्हें विरोधियों पर सफलता मिलेगी, प्रसन्न और उत्साही होंगे। अगर से सेवारत हैं तो कार्यों में सफल होंगे, चुनाव में जीत सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे जबकि व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पैरों और घुटनों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए पांचमुखी हनुमान कवच का पाठ करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - बुध
(24/03/2027 - 20/03/2028)**

आपके लिए मंगल की महादशा 22/09/2023 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 24/03/2027 को प्रारंभ होकर 20/03/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपकी लंबी यात्रा हो सकती है। प्रकाशन कार्य के लिए समय शुभ है। पत्रलेखन से लाभ होगा। उच्च शिक्षा के अवसर मिलेंगे। बहुत से मित्र होंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दिलचस्पी बढ़ेगी। शिक्षा, विज्ञान या धर्म से संबंधित यात्रा हो सकती है। भाई-बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। धन कमा सकते हैं। जनसंपर्क से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी विचारों की उत्तम प्रस्तुति द्वारा या कमीशन कार्य से धन कमा सकते हैं। आपके पिता समृद्ध और प्रसन्न होंगे। माता समाजकार्य में रुचि लेंगी। भाई-बहनों को भागीदारी, व्यापार, विवाह से लाभ हो सकता है। उनके प्रभावशाली मित्र होंगे, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी।

आपकी संतान को उच्चशिक्षा में सफलता मिलेगी, भाग्य उत्तम रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो साख में वृद्धि होगी, कार्य में प्रगति करेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को यात्रा और व्यापार से लाभ होगा।

स्नायविक थकान और पैरों की व्याधि से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए मूंग की दाल दान में दें।

**अंतर्दशा :- मंगल - केतु
(20/03/2028 - 16/08/2028)**

आपके लिए मंगल की महादशा 22/09/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 20/03/2028 को प्रारंभ होकर 16/08/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप भूमि, वाहन आदि क्रय कर सकते हैं। माता से संबंध मधुर रहेंगे, उनसे लाभ हो सकता है। शिक्षा में सफलता मिलेगी। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। कभी-कभी कार्यवश घर से दूर जा सकते हैं। आपके बहुत से मित्र होंगे जो आपकी मदद करेंगे। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। समाज, कार्यक्षेत्र और व्यापार में लाभ होगा; चुनाव में जीत होगी, शत्रुओं पर विजय की संभावना है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता को धन का लाभ और संचय होगा। माता का व्यक्तित्व चमकेगा। भाई-बहनों के लिए धनार्जन का संकेत है, प्रसन्न रहेंगे, शत्रुओं पर विजय होगी, मामापक्ष से लाभ होगा।

आपकी संतान की शिक्षा में बाधाएं आ सकती हैं। उन्हें ऊर्जा के अपव्यय से बचना चाहिए, बिना लाभ की गतिविधियों से दूर रहें। अगर से कार्यरत हैं तो कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं।

अगर आप कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ हो सकता है, जबकि व्यापारी व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; छाती में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र
(16/08/2028 - 16/10/2029)**

आपके लिए मंगल की महादशा 22/09/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 16/08/2028 को प्रारंभ होकर 16/10/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप हर प्रकार से समृद्ध बनेंगे। साझेदार के माध्यम से या विरासत में धन या अचल संपत्ति प्राप्त हो सकते हैं। घरेलू सुख उत्तम होगा। व्यापार में आय बढ़ेगी। सम्मान में वृद्धि होगी। प्रसन्नचित्त रहेंगे। उत्तम वस्त्र और भोजन उपलब्ध होंगे। परिवार में खुशहाली रहेगी। विभिन्न माध्यमों से धनार्जन होगा। दान-धर्म में रुचि लेंगे। परिवारजन और मित्र इज्जत करेंगे।

आपके जीवनसाथी विभिन्न माध्यमों से धनार्जन करेंगे। आपके पिता के खर्च बढ़ सकते हैं, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। माता सौभाग्यशाली रहेंगी, प्रसिद्ध और धनी बनेंगी, मित्र उनकी मदद करेंगे। भाई-बहनों का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शत्रु परास्त होंगे, कार्यालय उत्तम रहेगा।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे। परामर्शदाता धन कमाएंगे जबकि

व्यापारियों की आय में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मामूली तकलीफ का तुरंत इलाज करवाएं। अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के मंत्र का जाप करें।

ॐ शुं शुक्राय नमः

**अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य
(16/10/2029 - 21/02/2030)**

आपकी मंगल की महादशा 22/09/2023 को प्रारंभ हो रही है। मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 16/10/2029 को प्रारंभ होकर 21/02/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपका भाग्य उत्तम होगा, धनी बनेंगे। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। उच्चशिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। शिक्षा से संबंधित यात्राएं संभव हैं। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। ज्योतिषियों और दार्शनिकों के लिए समय शुभ है। अध्यात्म में रुचि रहेगी।

आपके जीवनसाथी को व्यापार में लाभ होगा, उच्चपद प्राप्त होगा, सुविधाएं उत्तम रहेंगी। आपके पिता को सफलता और उन्नति मिलेगी। माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, खुशी मिलेगी, विरोधी परास्त होंगे और धनलाभ होगा। भाई-बहनों की आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, वांछित स्थान पर तबादला होगा, विवाह और व्यापार में लाभ संभव है। आपकी संतान की शिक्षा पूर्ण होगी, इच्छाओं की पूर्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अगर आप सेवारत हैं तो उन्नति, उच्चाधिकारियों से लाभ और सम्मान का संकेत है। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारियों से कर्मचारी सहयोग करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य की आराधना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - चंद्र
(21/02/2030 - 22/09/2030)**

आपके लिए मंगल की महादशा 22/09/2023 को प्रारंभ हुई और को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र अंतर्दशा 7 मास की होगी और 21/02/2030 को प्रारंभ होकर 22/09/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, प्रसन्नता और मस्तिष्क के रुझान का कारक है।

इस अवधि में आपको सफलता, धन और लोकप्रियता प्राप्त होंगे। आपकी उपलब्धियों को सम्मान मिलेगा। घरेलू सुख और प्रसन्नता प्राप्त होंगे। समाज में कल्याणकारी कार्य करेंगे। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अचल संपत्ति, खेती आदि से लाभ प्राप्त होगा। वाहन सुख मिलेगा। उच्चपद प्राप्त हो सकता है। सुख-संतुष्टि से जीवन बसर होगा। निवास में

**महादशा :- राहु
(22/09/2030 - 22/09/2048)**

राहु की अन्तर्दशा 22/09/2030 को आरम्भ और 22/09/2048 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु-दशम भाव में स्थित है। राहु की दृष्टि-चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी सात वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, हर प्रकार का लाभ तथा महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति होगी। राहु की इस दशा में आपकी प्रगति, जीविका में उन्नति होगी, यश और ख्याति की प्राप्ति तथा तीर्थस्थलों की यात्रा होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में शक्ति होगी और आप शक्तिशाली तथा सक्रिय होंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण ज्वर, विषाणुजन्य संक्रामक रोग, रक्त संचार की समस्याएं, वातजन्य रोग, निचली भुजाओं की समस्या, चर्मरोग आदि हो सकते हैं। कुछ सावधानी बरत कर इनमें से अधिकांश से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। व्यापार-व्यवसाय में अच्छी कमाई होगी। सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। पिता से कुछ लाभ मिलेगा। आपका बैंक बैलेंस सन्तोषजनक रहेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि, उड्डयन, वैमानिकी, कला, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, कम्प्यूटर, खाद्यान्न से संबंधित सेवा आदि का चयन कर सकते हैं। कपड़ा, रत्न, दवा, चमड़ा, एण्टीबायोटिक दवा, प्लास्टिक, रबड़ तथा भोजन से संबंधित व्यापार लाभदायक होगा। सेवारत लोगों को लाभ, पदोन्नति, सहकर्मियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों से सद्‌व्यवहार और कार्य स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। व्यवसाय तथा व्यापार से जुड़े लोगों की अच्छी आय तथा लाभ में वृद्धि होगी। इस दशा के दौरान आपकी जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। आपको यश तथा ख्याति की प्राप्ति होगी और आप मानवीयता के कार्य करेंगे।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको सुख आराम मिलेगा। मंगल की अन्तर्दशा में आपको अचल सम्पत्ति, जमीन-जायदाद और वाहन का सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा में छोटी तथा दूर की यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप सभी परीक्षाओं और प्रतियोगिताओं में अच्छा करेंगे। विज्ञान, कला, कम्प्यूटर विज्ञान, वाणिज्य-व्यापार, भोजन, प्रौद्योगिकी आदि में आपकी रुचि हो सकती है। आपकी इच्छा शक्ति मजबूत है और आप स्वभाव से स्वतंत्र हैं तथा मौलिकता और मानसिकता से सम्बद्ध सभी विषयों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चे अच्छा करेंगे और आपको उनसे आनन्द मिलेगा। आपके जीवनसाथी को अचल सम्पत्ति की प्राप्ति, जीविकोपार्जन में प्रगति, सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपकी माता की यात्रा तथा साझेदार से लाभ मिलेगा, किन्तु, उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना होगा। आपके पिता को लाभ, बचत तथा सुख की प्राप्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को अचानक लाभ तथा परिवर्तन होगा। आपके बड़े भाई-बहनों की यात्रा, व्यय तथा मामूली स्वास्थ्य-समस्याएं हो सकती हैं।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपके जीविकोपार्जन में उन्नति तथा यात्रा होगी और आपको सुख मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा के कारण यात्रा, व्यय और धार्मिक कार्यों की ओर झुकाव होगा। शनि की अन्तर्दशा में आपको यश ख्याति, कार्यों में सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। बुध की अन्तर्दशा में सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति, प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय और यात्रा होगी जबकि केतु की अन्तर्दशा कुछ समस्या उत्पन्न कर सकती है। शुक्र की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति, सफलता, सुख तथा जीवन-वृत्ति में प्रगति होगी। सूर्य के कारण कुछ परिवर्तन हो सकता है जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ होगा और शादी तथा यात्रा होगी। मंगल की अन्तर्दशा में सम्पत्ति, हर प्रकार का लाभ तथा जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी।

**अंतर्दशा :- राहु - राहु
(22/09/2030 - 04/06/2033)**

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 22/09/2030 को प्रारंभ होकर 22/09/2048 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास 12 दिन होगी जो आपके लिए 22/09/2030 को प्रारंभ होकर 04/06/2033 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती। स्थिति के अनुसार यह शुभ या अशुभ हो सकता है। दशम भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे, साहस में वृद्धि होगी, लेखक, चित्रकार आदि हो सकते हैं। साहस की अधिकता के कारण पापपथ पर चल सकते हैं। इस संबंध में सावधान रहना आवश्यक है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में अपने इष्टदेव की उपासना के बाद बायें हाथ की मध्यमा अंगुली में गंगाजल और कच्चे दूध से धोकर धारण करें।